संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि सुचिता माधवराव राऊत का "मृणाल पाण्डे के 'चोर निकल के भागा' का अध्ययन" लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर ।
दि.21 दिसंबर, २००२

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

डॉ. सुनीलकुमार लवटे
प्रपाठक, महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुचिता माधवराव राऊत ने मेरे निर्देशन में ''मृणाल पाण्डे के 'चोर निकल के भागा' का अध्ययन'' लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्वनियोजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध छात्रा के कार्य से मैं संतुष्ट हूँ ।

कोल्हापुर ।
दि. 20 दिसंबर, २००२

शोध निर्देशक
सुनीलवटे
(डॉ. सुनीलकुमार लवटे)

प्रख्यापन

'मृणाल पाण्डे के 'चोर निकल के भागा' का अध्ययन'' प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इसके पूर्व शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

कोल्हापुर ।
दि. 20 दिसंबर, २००२

शोध छात्रा
S. M. Raut
(सुचिता माधवराव राऊत)

I

प्राक्कथन

मनुष्य जीवन तथा साहित्य-सृजन का गहरा संबंध है। साहित्य का स्रष्टा जो साहित्यकार है, वह अपने जीवन में जो कुछ देखता है, सुनता है तथा अनुभव करता है, उसी का ही वह अपने साहित्य में चित्रण करता है। साहित्य में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्र दिखाई देता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य के अनेक रूप हैं - उपन्यास, कथा, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, काव्य (पद्य) आदि। इन सब में नाटक दृक-श्राव्य माध्यम होने के कारण दर्शक के मन पर उसका गहरा असर करता है। वह दृष्टि एवं श्रवण दोनों को तृप्त करता है। इसीकारण 'काव्येषु नाटक रम्यम्' कहा गया है। नाटक में शिल्प, काव्य, कथा, अभिनय, संगीत आदि अनेक कलाओं का सुंदर संगम होता है। इसलिए मैंने एम्. फिल्. के अध्ययन के लिय नाटक विधा का चयन किया।

नाटक विधा का अध्ययन करते समय नाटक का शिल्प, भाषा, पात्र, वेशभूषा, मंचसज्जा आदि का अध्ययन करते समय नाटक की व्यापकता तथा सीमा का परिचय मुझे प्राप्त हुआ। नाटक के अनेक प्रकार होते हैं जैसे की ऐतिहासिक नाटक, सामाजिक, व्यंग्य, संगीत नाटक आदि। इन सब में मनुष्य तथा सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य करके समाज सुधार करने का प्रयास करनेवाले व्यंग्य नाटकों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। अत: एम्. फिल्. के लघुशोध प्रबंध के लिए किसी व्यंग्य नाटक लेने का संकल्प मैंने किया।

मानव कितना भी बुद्धिजीवी तथा तत्वनिष्ठ क्यों न हों, वह कुछ दोष तथा न्यूनताओं से ग्रस्त होता ही है। इन न्यूनताओं से मनुष्य को मुक्त करने के उद्देश्य से व्यंग्य साहित्यकार अपने साहित्य के व्यंग्यबाण चलाकर मनुष्य को इन दोषों से मुक्त करने का प्रयास करता हैं। साथ ही साथ अपनी व्यंग्य निर्मिति से पाठकों को कभी आंनदित करता है तो कभी ग्लानि से भर देता है। व्यंग्य साहित्यकार अपने अभिप्रेत द्वारा मानव समाज का निर्देशन करता है। वह किसी समस्या पर सीधे-सीधे प्रहार नहीं करता तो गूढ अथवा अप्रत्यक्ष इंगित द्वारा हँसते-

खेलते मानव समाज का पथदर्शन करता है। वह व्यंग्य में स्थित 'लगती हुई बात' द्वारा किसी का दिल दुखाना नहीं चाहता किंतु समाज में स्थित विसंगतियों का पर्दाफाश जरूर करना चाहता है, ताकि मानव समाज एक आदर्श समाज का स्वरूप धारण करें। लघुशोध प्रबंध के लिए व्यंग्य नाटक की खोज करते समय मृणाल पाण्डे का नवीनतम् नाटक 'चोर निकल के भागा' मैंने पढा। इस नाटक में स्थित सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासकीय तथा कला-संस्कृति के क्षेत्रों में स्थित समस्याओं एवं विसंगतियों पर किए तीखे व्यंग्य प्रहारों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। अपनी व्यंग्यात्मक भाषा द्वारा समाज के कृष्ण पक्ष को उजागर कर दुषित मूल्यों को नष्ट करने का लेखिका का प्रयास समर्थनीय एवं अभिनंदनीय है। इसीलिए मृणाल पाण्डे के प्रति मेरे मन में कौतुहल जागा। उनके अन्य नाटक तथा अन्य उपलब्ध साहित्य का भी पठन मैंने किया।

मृणाल पाण्डे समकालीन हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को अपनी रचनात्मक कौशल्य से समृद्ध करनेवाली रचनाकार है। मूलत: वे एक जानीमानी पत्रकार हैं। आज दूरदर्शन की ज्येष्ठ संपादिका के रूप में कार्यभार संभाल रही हैं। साथ ही कई वर्षों तक उन्होंने अध्यापन का कार्य भी किया। लेखन के क्षेत्र में कदम रखने के पश्चात उन्होंने कथा, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि क्षेत्रों में अपनी सशक्त लेखनी का परिचय दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं में वर्तमानकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक तथा स्त्री विषयक समस्याओं को उजागर किया हैं। अँग्रेजी भाषा में भी उन्होंनो साहित्य-सृजन किया हैं।

एम्. फिल्. के अध्ययन के लिए मैंने मृणाल पाण्डे के नाटक 'चोर निकल के भागा' का चयन किया। इस संदर्भ में शोध-निर्धेशक डॉ. सुनीलकुमार लवटे से चर्चा कर 'चोर निकल के भागा' का अध्ययन'विषय पर शोध-कार्य प्रारंभ किया। विषय का अध्ययन करते समय शुरू में मेरे सामने निम्न-लिखित सवाल खड़े हुए -

1. मृणाल पाण्डे का जीवन और व्यक्तित्व कैसा है ?

2. 'चोर निकल के भागा' का कथानक किसप्रकार का है ?

3. नाटक के पात्रों के चरित्र-चित्रण में लेखिका कहाँ तक सफल हुई है ?

4. नाटक में रंगमंच और अभिनय किस प्रकार है ?

5. नाटक लिखने के पीछे लेखिका का उद्देश्य क्या हैं ?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघुशोध प्रबंध में किया है। अध्ययन सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है।

पहला अध्याय :- मृणाल पाण्डे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय में मृणाल पाण्डे की जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया है। जीवनी के अंतर्गत उनके जीवन को प्रभावी रूप से स्पष्ट किया है। अत: उनके घर-परिवार, जन्म, शिक्षा एवं शौक, विवाह, प्रेरणा आदि की विवेचना की है। व्यक्तित्व में उनके अंतरंग तथा बहिरंग व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का परिचय दिया गया है। अंतरंग व्यक्तित्व में प्रतिभा संपन्न, कार्यक्षम, स्पष्टवादी, अध्यापिका आदि पहलुओं को उजागर किया है। इस अध्याय के अंतर्गत मृणाल पाण्डे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परस्परपूरक अध्ययन कर यह देखने का प्रयास किया है कि उनका साहित्य उनके अपने जीवन और व्यक्तित्व से कैसे प्रभावित एवं प्रेरित रहा है।

दूसरा अध्याय :- 'चोर निकल के भागा', का नाटक के तत्वों के आधार पर विवेचन.

प्रस्तुत अध्याय में 'चोर निकल के भागा' का नाटक के तत्वों के आधार पर सूक्ष्मअध्ययन किया है। नाटक के छ: तत्त्व-कथानक, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देश-काल तथा वातावरण, भाषा एवं शैली और उद्देश्य का विवेचन प्रस्तुत है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर

निष्कर्ष दिया है। इसके अंतर्गत प्रस्तुत नाटक की कलात्मकता का मूल्यांकन किया गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत है।

तीसरा अध्याय :- 'चोर निकल के भागा' का रंगमंचीय अनुशीलन

प्रस्तुत अध्याय में रंगमंचीय तथा निर्देशक के योगदान के बारे में विश्लेषण किया है। इसके अंतर्गत. नाटक के सर्वप्रथम मंचन, निर्देशन के बारे में संकेत दिए हैं। रंगमंचीयता में अभिनय रूपसज्जा, दृश्यसज्जा, ध्वनि-संयोजन, प्रकाश योजना को यथायोग्य प्रस्तुत किया है। इससे ज्ञात होता है कि लक्ष्य नाटक का लेखन एवं निर्मिति रंगमंचीयता को ध्यान में रखकर किस प्रकार की गई है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत है।

चौथा अध्याय :- 'चोर निकल के भागा', का व्यंग्य

इस अध्याय में नाटक में स्थित व्यंग्य के विविध रूपों को विस्तार से समझाया गया है। सामाजिक व्यंग्य के अंतर्गत महानगरों की भयावह स्थिति, समाज की विसंगतियों की चर्चा है। आर्थिक व्यंग्य के अंतर्गत शिक्षित बेकारों में होनेवाली आर्थिक तंगी, विदेशी शिक्षा का आकर्षण एवं परिणाम को दर्शाया गया है। राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यंग्य में सरकार की खोखली यंत्रणा, प्रशासन की निष्क्रियता, नेताओं की करनी और कथनी में विसंगति, राजनीति में फैला अंधविश्वास आदि पर व्यंग्य प्रहार कर लोगो को जाग्रत करने का प्रयास किया है। नाटक में कलावाद, मार्क्सवाद की चर्चा के साथ प्रहसन की भी झलक मिलती है। उसकी विवेचना प्रस्तुत अध्याय में आपको विस्तार से मिलेगी।

उपसंहार :-

लघुशोध-प्रबंध के निष्कर्षों और उपलब्धियों का सार उपसंहार में दिया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के जरिए 'चोर निकल के भागा' के साथ मृणाल पाण्डे के साहित्यिक महत्व एवं योगदान का रेखांकित किया गया है। यह रेखांकन मौलिक रखने की ओर विशेष ध्यान दिया

है । आशा है, भविष्य में मृणाल पाण्डे के जीवन और साहित्य संबंधी अन्य पहलुओं पर अध्ययन कर अनुसंधान की परंपरा को समृद्ध करेंगे । इसके बाद संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गई है ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को पूर्ति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता करनेवाले गुरूजनों, आत्मीय मित्रों एवं परिवार के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में अपना कर्तव्य समझती हूँ । सब से पहले मृणाल पाण्डे का आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध-कार्य के लिए आवश्यक मदद की हैं । प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध शोध निर्देशक डॉ. सुनीलकुमार लवटे, के निर्देशन का फल है । अपने कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ सही दिशा में निर्देशन किया है । साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन च्व्हाण तथा पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पी. एस्. पाटील ने मुझे प्रस्तुत अध्ययन में यथायोग्य मार्गदर्शन किया । उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करती हूँ । मेरी शिक्षा-दिक्षा तथा प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति के लिए अनवरत कष्ट उठानेवाले मेरे आदर्श माता-पिता आदि के आशीर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म करने की प्रेरणा देते रहे हैं । अध्ययन के दौरात अनेक ग्रंथालयों से सहयोग मिला, जैसे शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, राजाराम महाविद्यालय, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर पुणे विश्वविद्यालय, पुणे आदि ।

अंत में ग्रंथालय तथा उनके कर्मचारियों को भी ऋणी हूँ । शोध-कार्य को पूरा करने में टंकन कर्ता श्री. अनिल साळोखे के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ । मेरे शोध-कार्य को संपन्न बनाने में जिन ग्रंथों, व्यक्तियों का परोक्ष-अपरोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है उन सब का आभार मानकर मैं प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को परीक्षणार्थ विद्वानों के सामने विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ ।

कोल्हापुर

दिनांक :- 20 दिसंबर 2002

शोध-छात्रा

S. M. Raut

(सुचिता राऊत)